① शीलवती का चरित्र-चित्रण करें।

Answ- जम्बु द्वीप भारतवर्ष में इन्द्रपुरी के समान देवताओं द्वारा निर्मित लोगों के मन को आनंदित करने वाली नन्दनपुर नाम की एक श्रेष्ठ नगरी थी, प्रति पक्षियों के बल मर्दन करने में सिंह के समान अरिमर्दन नाम का राजा वहाँ राज्य करता था, गुण और रत्न में रत्नाकर के समान वहाँ एक सेठ निवास करता था। सिरि नाम की उसकी एक पत्नी थी जो अपने रूप और गुण से वह प्रत्यक्ष लक्ष्मी के समान थी। वह अपुत्र थी. इसलिए वह हृदय से दुःखी थी।

एक बार पशु-पक्षी के बोली का अनुकरण करने से मैं घर से निकाली गई, यदि दुबारा मैं तुम्हारी बोली का अनुकरण करूं तो मेरा पिता से मिलना भी शायद असम्भव हो जायेगा तुझे अपने मन की शांति के लिए फूल-माला ले लेना चाहिए। मेरे शील के प्रभाव से यह फूल माला सदा अमलिन रहेगी। यदि किसी समय यह अमलिन होनेवाली फूलमाला मलिन हो जाए यही मेरे शील खण्डित का द्योतक है।

इस प्रकार कहती हुई शीलवती, अपने हाथों से फूल-माला को अपने गले में डाल दी।

इसके बाद अजितसेन नायकमंत्री अपनी शीलवती को घर में एकांकी छोड़कर चिन्ता से रहित होता हुआ राजा के साथ चल दिया। तो शीलवती अजितसेन के मुख के

पर चिन्ता का कारण पूछती है। अजितसेन कहता है कि राजा के साथ तीर्थटन हेतु मुझे भी जाना है। यद्यपि तुम्हारे अखण्डित शील पर पूर्ण विश्वास है, फिर तुझे घर में अकेली छोड़कर राजा के साथ जाना मेरे मन को बेचैन कर देता है। इस बात को सुनकर शीलवती कहती है- हे प्रियतम इस संसार में भले ही अग्नि अपने जलन गुण को छोड़कर शीतल हो जाए, भले ही सूर्य पश्चिम दिशा में उदित हो, भले सुमेरु पर्वत कंपने लगे, भले ही धरती उछल कूद करने लगे, भले ही पवन स्थिर हो जाए, भले ही समुद्र अपनी मर्यादा को भंगकर गतिमान हो जाए। उस स्थिति में भी मेरे शील को कोई देव या मनुष्य खंडित नहीं कर सकता है।

इसके लेखक आचार्य सोमप्रभ सूरि जी है। ये प्राकृत एवं संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इसके सम्पादक डा० राजाराम जैन एवं डा० जैन चन्द्रदेव राय है।

उक्त गाथा का प्रसंग यह है कि अशोक नाम का मंत्री शीलवती को प्रेम में वशीभूत समझकर एक सेविका से सन्देश प्रेषित करता है। सेविका शीलवती के समीप जाकर कहती है कि- हे भद्रे! यह सुन्दर युवावस्था, फूल के सदृश्य कोमल थोड़े समय से आश्रय है। अतः सुन्दर युवावस्था फूल के सदृश्य कोमल थोड़े समय से अस्थिर है। अतः सांसारिक विषय-सुख का अनुभव

कर तुझे अपने जीवन को सफल बनाना चाहिए। यह तुम्हारे लिए सुखद प्रस्ताव लेकर आई है। शीलवती अपने मन में विचार करने लगी कि यह अभागा व्यक्ति वस्तुतः पाप कर्म में लिप्त है। दासी कहती है कि तुझे अपने शरीर का समागम के रस से अपने शरीर के रस से सिंचित करना चाहिए। इस प्रकार की युक्ति सुनकर शीलवती कहती है यह उचित संगत प्रतीत होती है परन्तु पर पुरुषों ~~असी~~ के साथ नहीं उच्च कुल में उत्पन्न हुई महिलाओं के लिए इस संसार का आचरण उसी प्रकार अयुक्त जिस प्रकार साधु के लिए द्रव्य का ग्रहण करना सच ही कहा गया है।

"साधु भूखा भाव का धन का भूखा नहीं।
धन का भूखा जो फिर वह साधु नहीं।"

जो इस संसार में इस प्रकार आचरण करता है, जिस प्रकार धनार्जन करने पर साधु का चरित्र यह उस शील उसी प्रकार नष्ट हो जाता है,

अतः शीलवती ने कौआ के संकेत कर रहा है कि एक बार पशु-पक्षी की बोली का अनुकरण करने से मैं घर से निकाल दी गई। दुबारा मैं तुम्हारी बोली का अनुकरण करूं तो शायद पिता से मिलना भी असंभव हो जायगा। इस उक्ति को सुनकर ससुर कहता है कि क्या बक रही हो। ससुर के बार-बार पूछे जाने पर शीलवती कहती है कि सुन्दर गुण के कारण ही चन्दन छेदन और घिसाटन जैसे दुःख को सहन करता है। रंग-गुण के कारण ही खण्डन और काड़ में तपाए जाने वाले कष्ट को सहन करता है। अतः मेरा गुण ही शत्रु बन गया है।

— The end